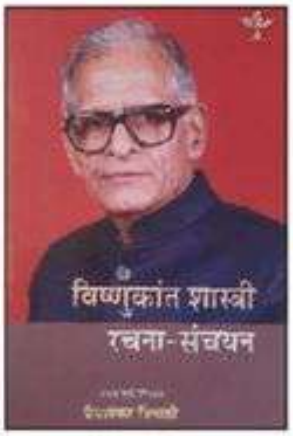

कृतित्व संचयन में व्यक्तित्व के बिंब

साहित्य अकादेमी/ रचना-संचयन/ प्रेमशंकर त्रिपाठी/ 375 रुपये

विष्णुकांत शास्त्री ने सृजन के विविध आयामों का स्पर्श करते हुए साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध किया है। इस रचना-संचयन में उनके अंतस की अनुभूतियां स्पष्ट और दीप्त स्वर में प्रकट हुई हैं। पुस्तक में 'तुलसीदास और रवींद्रनाथ की विनय भावना' तथा 'कबीर और तुलसी के आंतरिक साम्य' शीर्षक आलेख तुलनात्मक विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। रोचक शैली और भावाभिव्यंजक भाषा में लिखे, तार्किकता, विचारोत्तेजकता और विवेकसम्मत विवेचन से पूर्ण निबंध पाठक को बांधते हैं। प्रामाणिकता और पारदर्शिता से भरे संस्मरण भी ग्राह्य, सरस और भावपूर्ण हैं। लेखक की अंतर्दृष्टि जितनी पैनी है, अभिव्यक्ति भी उतनी ही मर्मस्पर्शी। रिपोर्ताज की अंतर्वस्तु 'बांग्लादेश मुक्ति आंदोलन' के दौरान लेखक के आंखों देखे और कानों सुने सत्य की ठोस भूमि पर टिकी है। वहीं यात्रा प्रसंगों का रस, काव्यात्मकता, प्रवाह मुग्ध करता है। तत्वग्राही और तलस्पर्शी दृष्टि से संपन्न कविताओं में माधुर्यभाव है, तो व्यंग्य की तिरछी धार भी। इस संचयन में विष्णुकांत शास्त्री के कृतित्व एवं रचना-वैविध्य को समेकित तथा समग्र रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास प्रेमशंकर त्रिपाठी ने किया है।

– पुरु शर्मा